संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के टैगोर नेशनल स्कॉलरशिप के अन्तर्गत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी द्वारा बनारस अंग की "ठुमरी, होरी, चैती" आदि पर दिनांक ०४.०२.२०१७ को आयोजित कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी द्वारा बनारस अंग की ठुमरी, चैती होरी की विगत तीन पीढ़ियों के गायन का विशिष्ट कार्यक्रम पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह (संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) में दिनांक ४ फरवरी, २०१७ को अपराह्न २ बजे प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम पण्डित चित्तरंजन ज्योतिषी, पूर्व कुलपति मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, डॉ० विजय शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशक, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी तथा श्री भारतभूषण शर्मा, निदेशक, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली ने माँ सरस्वती, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय एवं पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तदुपरान्त प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी, प्रो० ऋत्विक सान्याल, प्रो० वीरेन्द्रनाथ मिश्र, श्री भारतभूषण शर्मा डॉ० विजय शंकर शुक्ल एवं डॉ० प्रेम नारायण सिंह ने दीप प्रज्वलित किया।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी और प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी जी के सम्मान के साथ सभी अतिथियों का स्वागत डॉ० विजय शंकर शुक्ल ने किया। आपने कहा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा भारतीय कला से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य चल रहे हैं। इसी क्रम में कला से सम्बन्धित एक और महत्त्वपूर्ण कार्य है कलामूल शास्त्रमाला के अन्तर्गत सम्बन्धित मूल ग्रन्थों का प्रकाशन जिसमें संगीत-शास्त्र के अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है।

विशिष्ट अतिथि प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने अपने आशीर्वचन में कहा बनारस अंग की ठुमरी, चैती एवं होरी पर कार्यक्रम इसी संकाय में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने २०१३ में शुरु किया जिसमें पण्डित छन्नूलाल मिश्र के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ कलाकार यहाँ उपस्थित हुए। वह आरम्भ था। उस कार्य से प्रेरणा मिली कि जो कुछ बनारस अंग के उपस्थापन में पिछले सौ वर्षों

में अग्रसर हुआ है उस पर कार्य कराया जाय। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस पर व्यवस्थित रूप से कार्य कराने के लिए शोधवृत्ति प्रदान की है। संस्कृति मन्त्रालय के द्वारा उसको और आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि वर्तमान निदेशक द्वारा इस कार्य को प्राथमिकता दी गयी है और इसीलिए आज हम सब यहाँ उपस्थित हुए हैं।

मुख्य अतिथि प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी ने आशीर्वचन में कहा कि पूरब अंग का मतलब बनारस के इर्द-गिर्द फैली हुई गायन परम्परा है। बनारस अंग में बोल बनाव के अनेक विद्वान् हुए हैं। मुझे याद है पण्डित महादेव प्रसाद मिश्र जी ठुमरी गाते थे **अब ना बजाओ श्याम बँसुरिया।** इसी तरह चैती पर आधारित ठुमरी गायी जाती है **एही ठइयाँ मुदरी हेरा गइली रामा।** आपने इन गीतों को गाकर पूरब अंग में बोल बनाव के ढंग एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। नृत्य के रूप में ठुमरी लखनऊ में थी ही किंतु बनारस में आकर गायकी के रूप में प्रचलित हुई, जो पूरब अंग है। इनके सम्पूर्ण वक्तव्य को रिकार्डिंग में देखा जा सकता है।

डॉ० मधुमिता भट्टाचार्य ने स्त्रीकण्ठ की विगत तीन पीढ़ियों की विशेषताओं का दर्शन कराया। सर्वप्रथम दीपचन्दीताल में निबद्ध राग खमाज की ठुमरी **साची कहो मोसे बतिया** में विदुषी विद्याधरी बाई, विदुषी हुस्ना बाई, विदुषी राजेश्वरी बाई आदि की झलक मिली। दादरे की बन्दिश राग गारा और दादरताल में निबद्ध **बिन्दया ले गयी हमार रे मछलिया** की प्रस्तुति में विदुषी सिद्धेश्वरी देवी, विदुषी रसूलन बाई आदि के गायन विशिष्टता उजागर हुई। प्राचीन चैती जो राग माँझखमाज तथा दीपचन्दीताल में निबद्ध **एही ठइयाँ मोतिया हेरा गइल रामा** और प्रचलित होरी जो राग गारा एवं कहरवाताल में निबद्ध **कन्हैया घर चलो गुइयाँ आज खेले होरी** की प्रस्तुति में विदुषी निर्मला अरुण, विदुषी गिरिजा देवी, विदुषी वागेश्वरी देवी आदि की शैलीगत झलक मिली। उन्होंने ठुमरी, दादरा, होरी एवं चैती को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत कर वाहवाही लूटी।

प्रख्यात गायक पण्डित हरीश तिवारी ने पुरुष गायकों की विगत तीन पीढ़ियों के मार्मिक अन्दाज को अपने स्वर-संदर्भों में सजाया। आपने अपनी प्रस्तुति का प्रारम्भ ठुमरी के बादशाह उस्ताद मौजूद्दीन खाँ की प्रिय ठुमरी **फूलवा बिनत डाल-डाल** को द्रुत एकताल में राग बसंत के स्वर-संदर्भों में सजाते हुए प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। दीपचन्दीताल एवं राग खमाज में निबद्ध बोल वनाव की ठुमरी की प्रस्तुति में पण्डित महादेव मिश्र के अन्दाज का साक्षात् दर्शन मिलता रहा। बनारस की प्रसिद्ध दादरा **पानी भरेली कौन अलबेले की नार झमाझम** (जिसे हर

पीढ़ी ने गाया है) को प्रस्तुत कर आपने विशेष प्रशंसा प्राप्त की। दीपचन्दीताल एवं राग माँझखमाज में निबद्ध बनारस की प्रचलित चैती **सेजिया से सइयाँ रूठ गइलन हो रामा** को प्रस्तुत कर आपने पण्डित छन्नूलाल मिश्र का दर्शन करा दिया। तिवारीजी ने **कान्हा खेले कहाँ ऐसी होली गुइयाँ** की प्रस्तुति में भगवान् श्रीकृष्ण की होली का ध्यान-चित्र उकेर कर प्रशंसा पाई। विशिष्ट कार्यक्रम की अन्तिम कड़ी के रूप में पण्डितजी ने ताल दीपचन्दी एवं राग मिश्र भैरवी में निबद्ध बनारस अंग की सर्वाधिक लोकप्रिय ठुमरी **सँवरिया ने ऐसा जादू डाला बाजूबन्द खुल-खुल जाय** की अद्‌भुत् प्रस्तुति दी। आप दोनों के साथ तबले पर पण्डित विनोद लेले तथा हारमोनियम पर डॉ० विनय कुमार मिश्र ने यादगार संगत की। तानपूरे पर सुश्री आकाँक्षी यादव एवं सुश्री राजश्री नाथ ने संगत की। धन्यवाद ज्ञापन डॉ० प्रेम नारायण सिंह ने किया। इस अवसर पर श्री एवं श्रीमती मंजू सुदरम्, प्रो० वनमाला पर्वतकर, प्रो० शारदा वेलंकर, पण्डित पूरण महाराज, डॉ० विश्वनाथ पाण्डेय, श्री अशोक कपूर, श्री राहुल भट्ट, आदि संगीत के मर्मज्ञ पुरोधा उपस्थित थे। संचालन अनुराधा रतूड़ी ने की।